15 / 04 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

तकदीरवान आत्मा होने का अनुभव

➢➢ मैं इस संसार की सबसे भाग्यवान आत्मा हूँ...

➢➢ मैं अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख रही हूँ...

➳_ ➳ स्वयम भगवान् ने मुझे चुना है.

➳_ ➳ वह मेरा हो गया...

➳_ ➳ वाह रे मेरा भाग्य...

→ मैं आत्मा सर्व प्राप्ति स्वरुप बन गयी हूँ...

- सर्व गुणों में
- सर्व शक्तियों में
- ज्ञान खजाने में
- सर्व प्राप्तियों से मैं संपन्न हूँ
  - हर संकल्प में
  - हर श्वास में
  - हर सेकंड में मैं अखूट खजाने प्राप्त कर रही हूँ...
  - हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव कर रही हूँ..
  - हर आत्मा को स्नेह दे रही हूँ...

➢➢ मैं भाग्यवान आत्मा सब के लिए शुभ भावना शुभ कामना रख रही हूँ..

➳_ ➳ मेरे मन में बेहद की भावना है...

➳_ ➳ बेहद का स्नेह है...

➳_ ➳ सबके सुखी और शांत होने की शुभ भावना है..

➳_ ➳ मैं बेहद वृत्ति में स्थित हूँ..

➳_ ➳ यह बेहद का ज्ञान...

➳_ ➳ बेहद का रूहानी स्नेह दुःख को समाप्त कर रहा है...

→ मैं आत्मा हर कर्म में न्यारी और प्यारी बनती जा रही हूँ...

→ न्यारा और प्यारा बनने से सदा सुखी और शांत बन रही हूँ...

→ रूहानी सम्बन्ध में आने से मेरी बुद्धि एकाग्र हो रही है...

→ सभी हलचल समाप्त हो रही है...

→ मैं अचल अडोल बन रही हूँ...

→ प्रश्न समाप्त हो रहे हैं...

→ मैं त्रिकाल दर्शी बन रही हूँ...

→ सदा फुलस्टॉप लगा रही हूँ...

→ क्या, क्यों से परे जा रही हूँ...

→ क्या करना है, इस पर ध्यान दे रही हूँ...

- मन ही मन अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख मुस्करा रही हूँ..
- वाह मेरे बाबा...
- वाह रे मैं श्रेष्ठ आत्मा...
- वाह रे मेरा भाग्य...
- वाह रे संगम का श्रेष्ठ समय...